www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 10 अंक : 13 रोहतक, 28 अगस्त, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

भोगवाद और भौतिकवाद ही सुरसावाद है

❑ प्रो० ओमकुमार आर्य, उपप्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

'रामायण' और **'महाभारत'** हमारे इतिहास-ग्रन्थ भी हैं और काव्य-ग्रन्थ भी। बल्कि यह कहना भी गलत नहीं है कि ये हमारे काव्यात्मक इतिहास हैं। यह भी सही है कि समय के साथ इन ग्रन्थों में मिलावट भी बहुत हुई, अलग-अलग लेखकों ने इनको अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत किया। संस्कृत में लिखी महर्षि वाल्मीकि की 'रामायण' हिन्दी में लिखे गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरित-मानस' (प्रचलित नाम 'रामायण') से पूरी तरह मेल नहीं खाती। इसी प्रकार 'जय' से प्रारम्भ होकर 'भारत' होती हुई 'महाभारत' तक 'महाभारत' ग्रन्थ की यात्रा भी अपने साथ कितने ऐसे प्रक्षिप्तांश ले आई है जो मूल कथा से संबद्ध न होते हुये भी 'महाभारत' की कथा के अभिन्न अंग बने हुये हैं। यहाँ यह बताने का मेरा उद्देश्य मात्र यह है कि हम आज उन सभी आख्यानों, उपाख्यानों, अवान्तर कथाओं, उपकथाओं का (जो इन ग्रन्थों में मिलती हैं) पूरी तरह समर्थन या अनुमोदन नहीं कर सकते। उनमें से अधिकांश प्रसंगों की ऐतिहासिक प्रामाणिकता भी संदिग्ध हैं, किन्तु हम ऐसे आख्यानों का प्रतीकात्मक महत्त्व, उनका संदेश, वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता है भी या नहीं है, आदि-आदि पर विचार करके उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं, उनकी काफी कुछ उपादेयता हमारे लिये आज भी है, ऐसा मेरा मानना है।

प्रो० ओमकुमार आर्य

और ऐसा ही एक उपाख्यान है जो हनुमान के समुद्र-लंघन से जुड़ा हुआ है जिसमें सुरसा राक्षसी समुद्र लंघन के समय बड़ी भारी बाधा उपस्थित करने का प्रयास करती है। आइये, संक्षेप में देखें कि वह पूरा प्रकरण क्या है? उक्त प्रकरण 'रामचरित मानस' में 'सुन्दर काण्ड' के एकदम प्रारम्भ में आया है और मुश्किल से चार-पाँच पृष्ठों का ही है। उपाख्यान बतलाता है कि जाम्बवन्त द्वारा प्रशंसित और प्रोत्साहित होकर हनुमान जी समुद्र लांघने को तत्पर हुये और अपने गन्तव्य की ओर चल पड़े। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में—

जामवन्त के वचन सुहाये।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाये॥

और फिर हनुमान जी यह कहकर अपनी यात्रा पर निकल पड़े कि—

जब लगि आवौं सीतहिं देखी।
होई काजु मोहि हरष विसेषी॥
यह कहि नाई सबन्ह कहुँ माथा।
चलेऊ हरषि हियँ धरि रघुनाथा॥

जब वे समुद्र तट पर आये तो रास्ते में एक पर्वत देखा, उसको आसानी से पार कर लिया। मैनाक पर्वत ने चाहा कि हनुमान जी उस पर विश्राम करें, किन्तु हनुमान जी यह कहकर आगे बढ़ गये कि—

हनुमान तेहि परसाकर,
पुनि कीन्ह प्रणाम।
राम काजु कीन्हें बिनु,
मोहि कहाँ विश्राम॥

अर्थात् हनुमान ने मैनाक पर्वत को बस हाथ से छू भर दिया, फिर सादर प्रणाम किया और कहा कि मुझे मेरे स्वामी राम का कार्य पूरा किये बिना विश्राम कहाँ? शायद किसी अंग्रेजी के कवि ने ये पंक्तियाँ हनुमान जी के लिये ही लिखी थीं—

Woods are lovely, fair and deep
But I have promises to keep
And miles to go before I sleep

(वन प्रान्त बहुत ही आकर्षक, रमणीक और सुहावना है। किन्तु मुझे तो अपने कुछ वचन और वायदे निभाने हैं। इससे पूर्व कि मैं निद्रादेवी की गोद में आराम करूँ, मुझे तो मीलों, मीलों और मीलों की यात्रा पूरी करनी है।)

और फिर है उपाख्यान का वह अंश, जो है तो अत्यन्त छोटा पर सारगर्भित है, भोगवाद और भौतिकवाद की ओर संकेत भी करता है और इनसे बच निकलने का रास्ता भी बतलाता है। हनुमान का सामना सुरसा नामक राक्षसी से होता है जो सर्पों की माता है और जिसको देवताओं ने हनुमान के बल, बुद्धि और पराक्रम को जानने के लिये (परीक्षार्थ) भेजा है। उसने हनुमान को अपने मुँह में लेकर उदरस्थ करने का प्रयास किया तो हनुमान जी ने कहा कि हे माता, मुझे जाने दो, मैं श्री रामचन्द्र जी के सौंपे कार्य को पूरा करने जा रहा हूँ। कार्य पूरा कर लेने पर मैं स्वयं आकर तुम्हारा आहार बन जाऊँगा, मुझ पर विश्वास करो, मुझे जाने दो।

राम काज करि फिरि मैं आवौं।
सीता कई सुधि प्रभुहि सुनावौं॥
तब तव बदन पैठिहउँ आई।
सत्य कहउँ मोहि जान दे माई॥

लेकिन सुरसा नहीं मानी। उसने मुँह खोला और हनुमान को अपने मुँह में ले लिया। हनुमान ने अपना आकार बढ़ा लिया, तो सुरसा ने भी अपना मुख-विवर और अधिक फैला लिया। दोनों में मानो होड़ लग गई, सुरसा जितना मुख का आकार बढ़ाती थी, हनुमान उससे दुगुना आकार बढ़ा लेते थे। 'रामायण' में आता है—

जस-जस सुरसा बदनु बढ़ावा।
तासु दून कपि रूप देखावा।
सत जोजन तेहि आनन कीन्हा।
अति लघुरूप पवनसुत लीन्हा॥

यहाँ जोजन (योजन) शब्द आया है, एक योजन चार कोस के बराबर माना जाता है तो 100 योजन तो चार सौ कोस हो जायेगा। इससे सहमत नहीं हुआ जा सकता किंतु यह माना जा सकता है कि सुरसा ने जब अपना मुख बहुत बड़े आकार का कर लिया तो हनुमान जी झट से बहुत ही लघुकाय बन गये और सुरसा के मुख से बाहर निकल गये। तब सुरसा भी प्रसन्न हुई, उसने यहाँ पर भी हनुमान जी को बता दिया कि वह तो उसके बल, बुद्धि, पराक्रम की परीक्षा लेने आई थी। हनुमान जी परीक्षा में उत्तीर्ण हुये, सुरसा ने उसको आशीर्वाद दिया और अपने स्थान को लौट आई। उसने आशीर्वाद दिया कि—

राम काजु सबु करिहहु, तुम्ह बल-बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो, हरषि चलेउ हनुमान॥

अब देखना यह है कि यह 'सुरसावाद' क्या है? इसका भोगवाद, भौतिकवाद, ऐषणावाद आदि से क्या संबंध है और इस आख्यान में उक्त 'वादों' से बचने का कौन-सा उपाय भी सुझाया गया है? वास्तव में यह प्रकृति ही 'सुरसा'='सु' रसा है, क्योंकि इन्द्रिय-सुख और विषय वासनाओं के पंक

शेष पृष्ठ 2 पर....

'ओ३म्' के अर्थ

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

'ओ३म्' यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं, जैसे—अकार से विराट्, अग्नि और विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर ही के हैं।

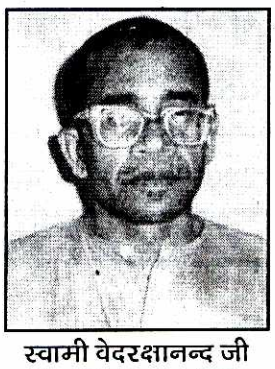

स्वामी वेदरक्षानन्द जी

अथ ओंकारार्थः—

(वि) उपसर्ग पूर्वक **(राजृ दीप्तौ)** इस धातु से क्विप् प्रत्यय करने से 'विराट्' शब्द सिद्ध होता है। 'यो विविधं नाम चराऽचरं जगद्राजयति प्रकाशयति वा विराट्' विविध अर्थात् जो बहु प्रकार के जगत् को प्रकाशित करे इससे **'विराट्'** नाम से परमेश्वर का ग्रहण होता है।

(अञ्चु गतिपूजनयोः) (अग, अगि, इण् गत्यर्थक) धातु हैं इनसे 'अग्नि' शब्द सिद्ध होता है। 'गतेस्त्रयोऽर्थाः ज्ञानं गमनं प्राप्तिश्चेति, पूजनं नाम सत्कारः।' 'योऽञ्चति अञ्चतेऽगत्यङ्गत्येति सोऽयमग्निः' जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम **'अग्नि'** है।

(विश प्रवेशने) इस धातु से 'विश्व' शब्द सिद्ध होता है। 'विशन्ति प्रविष्टानि सर्वाण्याकाशादीनि भूतानि यस्मिन्। यो वाऽऽकाशादिषु सर्वेषु भूतेषु प्रविष्टः स विश्व ईश्वरः' जिसमें आकाशादि सब भूत प्रवेश कर रहे हैं अथवा जो इनमें व्याप्त होके प्रविष्ट हो रहा है इसलिये उस परमेश्वर का नाम **'विश्व'** है। इत्यादि नामों का ग्रहण अकारमात्र से होता है।

'ज्योतिर्वै हिरण्यं तेजो वै हिरण्यमित्यैतरेयशतपथब्राह्मणे' 'यो हिरण्यानां सूर्यादीनां तेजसां गर्भ उत्पत्तिनिमित्तमधिकरणं स हिरण्यगर्भः' जिसमें सूर्यादि तेजवाले लोक उत्पन्न होके जिसके आधार रहते हैं अथवा जो सूर्यादि तेजःस्वरूप पदार्थों का गर्भ नाम उत्पत्ति और निवासस्थान है। इससे उस परमेश्वर का नाम **'हिरण्यगर्भ'** है। इसमें यजुर्वेद के मन्त्र का प्रमाण है—

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

इत्यादि स्थलों में 'हिरण्यगर्भ' से परमेश्वर ही का ग्रहण होता है।

(वा गतिगन्धनयोः) इस धातु से 'वायु' शब्द सिद्ध होता है। (गन्धनं हिंसनम्) 'यो वाति चराऽचरञ्जगद्धरति बलिनां बलिष्ठः स वायुः' जो चराऽचर जगत् का धारण, जीवन और प्रलय करता और सब बलवानों से बलवान् है इससे उस ईश्वर का नाम **'वायु'** है।

(तिज निशाने) इस धातु से 'तेजः' और इससे तद्धित करने से 'तैजस' शब्द सिद्ध होता है। जो आप स्वयं प्रकाश और सूर्यादि तेजस्वी लोकों का प्रकाश करने वाला है, इससे उस ईश्वर का नाम **'तैजस'** है। इत्यादि नामार्थ उकार मात्र से ग्रहण होते हैं।

(ईश ऐश्वर्ये) इस धातु से 'ईश्वर' शब्द सिद्ध होता है। 'य ईष्टे सर्वैश्वर्यवान् वर्त्तते स ईश्वरः' जिसका सत्य विचारशील ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है, इससे उस परमात्मा का नाम **'ईश्वर'** है।

(दो अवखण्डने) इस धातु से 'अदिति' और इससे तद्धित करने से 'आदित्य' शब्द सिद्ध होता है। 'न विद्यते विनाशो यस्य योऽयमदितिः+अदितिरेव आदित्यः' जिसका विनाश कभी न हो उसी ईश्वर की **'आदित्य'** संज्ञा है।

(ज्ञा अवबोधने) 'प्र' पूर्वक इस धातु से 'प्रज्ञ' और इससे तद्धित करने से 'प्राज्ञ' शब्द सिद्ध होता है। 'यः प्रकृष्टतया चराऽचरस्य जगतो व्यवहारं जानाति स प्रज्ञ+प्रज्ञ एव प्राज्ञः' जो निर्भ्रान्त ज्ञानयुक्त सब चराऽचर जगत् के व्यवहार को जानता है इससे ईश्वर का नाम **'प्राज्ञ'** है। इत्यादि नामार्थ मकार से गृहीत होते हैं। जैसे एक-एक मात्रा से तीन-तीन अर्थ यहाँ व्याख्यात किये हैं वैसे ही अन्य नामार्थ भी ओंकार से जाने जाते हैं। **(महर्षि दयानन्द)**

भोगवाद और भौतिकवाद ही..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

में धँसा-फँसा जीवात्मा अज्ञानतावश यह मानता है कि प्रकृति के पदार्थों में 'रस' है, वे रस की खान हैं और जिसकी देन ये सब रसीले पदार्थ हैं, सुखोपभोग के ये साधन हैं, वह प्रकृति 'सुरसा' है। जीवात्मा उसमें अधिक, और अधिक संलिप्त होता जाता है, 'प्रत्याहार' को भूल प्रकृतिप्रदत्त पदार्थों के रसास्वादन में लगा रहता है। यही उसकी भोगवाद, भौतिकवाद, सुरसावाद और ऐषणावाद की उपासना है, पूजा-आराधना है और यही प्रवृत्ति जीवात्मा के दुःखों का मूल कारण भी है।

तो सुरसावाद से छुटकारा कैसे मिले? भोगवाद, भौतिकवाद (materialism), ऐषणावाद से मुक्ति कैसे मिले? भोगों में प्रवृत्ति से भोग- लालसा कभी शांत नहीं होगी। उपनिषद् का ऋषि कहता है कि जैसे जलती आग पर घी डालते रहने से आग बुझने की बजाय और अधिक प्रचण्ड होती जाती है उसी तरह से भोगों में रुचि से भोगों का शमन नहीं होता, वे और अधिक बढ़ जाते हैं और एक दिन हम उस स्थिति में पहुँच जाते हैं जिसका चित्रण महाराज भर्तृहरि ने यूं किया है—

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता.....तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥

अर्थात् 'भोग' ज्यों के त्यों बने रहते हैं, भोगते-भोगते हम चुक जाते हैं, मिट जाते हैं। तृष्णा तरुणि की तरुणि (युवती) बनी रहती है, हम पर बुढ़ापा छा जाता है। इसलिये बचने का उपाय भोगों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए उनके साथ दौड़ते रहने में नहीं है, बल्कि विरमित होकर 'त्यागवाद' की ओर लौटने में है—**'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा'** का मार्ग ही बचाव का एकमात्र मार्ग है। 'प्रेय' की भूलभुलैया से बाहर निकलकर 'श्रेय' की शरण में जाना ही 'सुरसावाद' से मुक्ति पाने का एकमात्र उपाय है। यहाँ गौरतलब है कि सुरसा के मुख के बढ़ते आकार से अपना आकार दोगुणा बना लेना भी हनुमान को सुरसा की पकड़ से नहीं छुड़ा सका, हाँ वे तुरन्त अत्यन्त 'लघु' बने और सुरसा के मुख से बाहर निकल गये। अपने को समेटना, सिकुड़कर अंतर्मुख हो जाना ही भोगवाद, भौतिकवाद, ऐषणावाद को मात देने का एकमात्र कारगर उपाय है, इसी उपाय से हनुमान सुरसा की पकड़ से बाहर निकले। पौराणिक परम्परा में मन्दिरों के मुख्य द्वारों के सामने पत्थर पर 'कश्यप' (कछुये की आकृति) आकृति बनी होती है। कछुये को जब भी संकट का आभास होता है वह अपने अंगों को सिकोड़ लेता है। इसलिए कश्यपाकृति का प्रतीकार्थ यह है कि सांसारिक विषय वासनायें बड़ा खतरा हैं, सावधान रहो, इन्द्रियों को उनकी ओर मत भागने दो, अंदर की ओर लौटा लो, मन में स्थिर कर लो, और उससे भी आगे 'आत्मस्थ' कर लो। 'स्व' में स्थित रहोगे तो 'स्वस्थ' भी रहोगे अन्यथा रोगों से ग्रस्त रहोगे, त्रस्त रहोगे।

यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि जब सुरसा की पकड़ से हनुमान बाहर निकले, एक प्रकार से सुरसा को पराजय और हनुमान को विजय मिली तो सुरसा ने हनुमान को शुभकामनाएँ दीं, अपना शुभाशीर्वाद दिया जो स्पष्ट संदेश देता है कि सुरसा=प्रकृति, भोगवाद, भौतिकवाद, ऐषणावाद के चंगुल में फँसे रहे तो हम 'दास' होंगे और ये 'वाद' हमारे क्रूर स्वामी होंगे और यदि हम इन्हें अपने अधीन रखेंगे तो हम सुखी स्वामी होंगे और ये हमारे विनम्र सेवक होंगे। ये सभी वाद Materialism के अन्तर्गत आ जाते हैं, अतः स्मरण रहे कि—

Materialism is a good servant but a bad master.

रामायणान्तर्गत आया सुरसा-उपाख्यान आज के दुःखी मानव के लिये बहुत ही उपयोगी है, बहुत ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह प्रकरण मनुष्य को सुख-शान्ति का मार्ग बतलाता है। यह प्रकरण स्पष्ट संदेश देता है कि सुख 'भोग' में नहीं 'त्याग' में है। प्रसन्नता 'बाहर' नहीं 'अंदर' है, सुख व्यर्थ के विस्तार और फैलाव में नहीं, अपने को समेटने और सिकोड़ने में है। सारे आख्यान का सार यह है कि—

सुरसावाद, भोगवाद, भौतिकवाद सब एक समान।
ये असाध्य महारोग हैं, जिनसे आज मानव परेशान॥
जितना इनके साथ चलोगे, उतना ही उलझते जाओगे।
भोग भोगते रहने से, भोगों को मिटा न पाओगे॥
अपने को समेट 'लघुकाय' बनो, तब जाकर होगा समाधान।
छोटा बनकर ही निकले थे, सुरसा-मुख से वीर हनुमान॥

सम्पर्क—जवाहरनगर, पटियाला चौक, जीन्द-126102 (हरयाणा) मो० 09416294347, फोन 01681-226147

सच्ची उपासना ही पहिचान

-: वेद-मन्त्र :-

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि॥ 6॥ 248॥ (सामवेद)

तुम्हें ऐश्वर्य प्राप्त होगा, वृद्धि होगी, तुम वासनाओं को नष्ट कर पाओगे और शतक्रतु बनोगे। इस मंत्र में उसी बात को वे दूसरी प्रकार से कहते हैं कि यदि तुम्हारी वृद्धि होती है, तुम वासनाओं का विनाश कर पाते हो और तुम्हारे अन्दर एक ज्योति उत्पन्न होती है तब तो समझ लो कि तुम्हारा स्तवन ठीक है, अन्यथा नहीं। वे कहते हैं कि ऐ [मरुतः] = विषयों के प्रति लालायित होने वाले पुरुषो! उस [इन्द्राय] = परमैश्वर्य के दाता प्रभु के लिये [गायत] = गायन करो। जो गायन [बृहत्] = तुम्हारी वृद्धि का कारण है। [वृत्रहन्तमम्] = अधिक से अधिक वासनाओं का विनाश करने वाला है और [येन] = जिससे [ज्योतिः] = प्रकाश को (ज्ञान को) [अजनयन्] = अपने में उत्पन्न करते हैं। कैसे प्रकाश को? [देवं] = जो प्रकाशमय है तथा [देवाय] = आत्मा के लिये [जागृवि] = जगाने वाला है। कौन उत्पन्न करते हैं? [ऋतावृधः] = ऋत के द्वारा नियमितता के द्वारा अपना वर्धन करने वाले।

स्तुति के ये परिणाम हैं (1) वृद्धि (2) वासना विनाश (3) विज्ञान के सूर्य का उदय। यदि ये परिणाम हैं तो स्तवन ठीक है—अन्यथा नहीं। स्तवन से जिस ज्ञान की उत्पत्ति होती है वह ज्ञान प्रकाशमय है। उसमें आत्मा को अपना कर्तव्यपथ स्पष्ट दिखता है। इस ज्ञान से—जीवात्मा सदा सजग रहता है। जिन विषयों के प्रति सामान्य जगत् बड़ा सतर्क रहता है उन्हीं को सब कुछ समझकर उनमें उलझा रहता है। यह ज्ञानी ज्ञान के कारण उन विषयों की माया-ममता को देखकर कभी उनमें फंसता नहीं। यह ज्ञान सदा उसे जागरित रखता है और इसीलिए ये विषयरूप परिपंथी इस पर आक्रमण नहीं कर पाते। स्तवन से प्राप्य इस ज्ञान को पाते वे हैं जो कि बहुत ही नियमित गति से चलते हैं। कोई भी चीज आवेश में एक-दो दिन या कभी-कभी (by fits and starts) की जाकर लाभप्रद नहीं होती दीर्घकाल—नैरन्तर्य और आदर से सेवित भी 'ऋतावृध' को ही ज्ञान प्राप्त कराता है। ऋतावृध्—जो कि ऋत से नियमित गति से आगे बढ़ रहा है।

भावार्थ—यदि हमारा स्तवन हमारे में उल्लिखित परिणामों को नहीं पैदा करता रहा तो स्पष्ट है कि हमारे स्तवन में कहीं कमी है। उस कमी को ठीक करके हम प्रभु के सच्चे स्तोता बनें और वृद्धि, वासना, विनाश व विज्ञान को प्राप्त करें।

—आचार्य बलदेव

भजन

भारत माँ को वीरों की, अब सख्त जरूरत है।
कल परसों की बात नहीं, इस वक्त जरूरत है॥
लाखों गऊमाता भारत में निशदिन मारी जां।
जीवित बछड़े बछियाओं की खाल उतारी जां।
मिनिस्टरों के आगे नाचने युवती कुँवारी जां।
यूँ पाप का पलड़ा हर पल-पल में होता भारी जां।
दुष्टों के दमन की हम सबको इकलख्त जरूरत है।
भारत माँ को वीरों की, अब सख्त जरूरत है॥
हिन्दी भाषा मिटा दई, इन नकली गोरों ने।
भारत माता लूट लई, दिन धौली चौरों ने।
सभ्यता करी समाप्त सभी नेहरू के छोरों ने।
उजाड़ दिया ये बाग अवारा फिरते ढोरों ने।
माँग रही भारत माता दो रक्त जरूरत है।
भारत माँ को वीरों की, अब सख्त जरूरत है॥
वीर शहीदों का जग से ये नाम मिटा देंगे।
कोई नहीं यहाँ पर हुआ राम घनश्याम मिटा देंगे।
भाषा वेश विशेष देश से आम मिटा देंगे।
ऋषि-मुनियों की मर्यादा इन्तजाम मिटा देंगे।
मिल करके दिल्ली का पलट दो तख्त जरूरत है!
भारत माँ को वीरों की, अब सख्त जरूरत है॥
गांधी ले गया नाश देश का बंटवारा करके।
ज्यादा भूमि दे दई बढ़िया जिन्ना से डरके।
अब मुस्लिम लीग से मिल रहे नेता कौली भर-भरके।
होगा युद्ध घमासान बांध लो कफन सभी सरके।
ऋषि दयानन्द-सा आ जाये कोई भक्त जरूरत है।
भारत माँ को वीरों की, अब सख्त जरूरत है॥

—स्वामी देवानन्द भजनोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

राजनेताओं का प्रजा से व्यवहार

प्रजा राजा के पुत्रवत् होती है। राजा का कर्त्तव्य है कि वह प्रजा को अपने संतान के सदृश सुख देवे। इस प्रकार दोनों में पिता-पुत्र की तरह व्यवहार व संवाद होना चाहिए। लेकिन राजनेताओं ने अपनी गरिमा खो दी है। आजकल विभिन्न राज्यों में सुनने व हरयाणा में देखने में आता है कि प्रजा जब भी अपनी कोई बात राजनेताओं तक पहुंचाना चाहती है तो पुलिस प्रशासन को लाठियाँ, बन्दूकें, वाहन, घोड़ों से सुसज्जित करके प्रजा की आवाज कुचलने के लिए भेज दिया जाता है। क्या इसे प्रजातन्त्र कह सकते हैं? अनेक बड़े आन्दोलनों में राजनेता ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं कि प्रशासन और प्रजा परस्पर भिड़ जाते हैं व जान-माल की बड़ी हानि होती है। राजनेता अपने उत्तरदायित्व, आत्मिक बल इतना खो चुके हैं कि अपनी उचित मांग को लेकर एकत्रित प्रजा समूह के सम्मुख उपस्थित नहीं होते। अहं तब स्पष्ट दिखाई देता है जब दुश्मन की तरह कुचलने के लिए घोड़ा पुलिस भी बुला ली जाती है। ऐसा ही नजारा मुझे वर्तमान में अतिथि अध्यापकों की रोहतक में जारी भूख हड़ताल के दौरान दिखाई दिया।

आचार्य अभय आर्य

पानीपत में हाल ही में सी.एम. साहब का कार्यक्रम था। भय था कि कहीं श्री गोपालदास (जो गोचरान भूमि मुक्ति के लिए लम्बी भूख हड़ताल पर बैठे हैं) के समर्थक काले झण्डे न दिखा दें। इसी भय के चलते कार्यक्रम से पहले रात दो बजे गाँव राजाखेड़ी जहाँ से श्री गोपालदास सम्बन्ध रखते हैं, वहाँ अनेक युवकों को पुलिस ने उठा लिया। बुद्धिजीवी चिन्तन करें कि प्रजातन्त्र में यह कैसी कार्यवाही थी? क्या आपको यह सब देखकर अंग्रेजी शासन की याद नहीं आती? दिल्ली में भी 'जोधा-अकबर' टी.वी. सीरियल का विरोध करने वालों के पुलिस द्वारा सिर फुड़वा दिये गये। 'करौंथा काण्ड' (रोहतक) की तो पूछो ही मत। शायद हैदराबाद सत्याग्रह के आरम्भ में भी ऐसी धर-पकड़ आर्यों की नहीं हुई होगी। जो जहाँ था, करौंथा पहुँचने से पहले, वहीं दबोच लिया गया। रामपालदास के अनुयायी कई हजार की संख्या में आश्रम में हथियारों समेत घुसते गए। आर्यों ने प्रशासन से सवाल किया कि क्या आप द्वारा लगाई गई धारा-144 इन पर लागू नहीं है? मुझे अब भी हैरानी होती है कि सिवाए मौन के उनके पास कोई उत्तर नहीं था। स्थिति अति गंभीर थी। लेकिन एक भी राजनेता सत्याग्रहियों से बात करने नहीं आया, राजा की बात ही दूर की है। केवल पुलिस बल का भय दिखाते रहे। परिणाम क्या हुआ? तीन अनमोल जीवन चले गए। दो आर्ययुवक जो नित्यप्रति सन्ध्या-हवन करते थे, उनके प्राण ले लिए गए। शास्त्रों के अनुसार जिस राज्य में बेकसूर महिलाओं, बालकों पर अत्याचार होते हैं, उस राज्य का राजा मृतक समान ही होता है। यहाँ क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल जैसे पवित्र युवा संदीप आर्य, युवा साधु आचार्य उदयवीर, सत्याग्रहियों को पानी पिलाने वाली बहन प्रोमिला को गोलियों से भून दिया गया। रामपालदास के आश्रम से निकली गोली बहन प्रोमिला के प्राण ले गई। रामपालदास पर धारा-302 लगने पर उसे गिरफ्तार तक नहीं किया गया? आर्यों के देश आर्यावर्त में आर्यसभ्यता व संस्कृति के विरोधी रामपालदास को न्याय के तराजू में आर्यों से अति भारी तोला जाता है। चिन्तन करें ये कैसे राजनेता हैं? यह कैसा राज्य है?

शोक-सन्देश

दिनांक 12 अगस्त 2013 को श्रीमती सरोज देवी पत्नी श्री अजीतसिंह नम्बरदार सांघी का 44 वर्ष की अल्पायु में ही आकस्मिक निधन हो गया जिसका समाचार सुनकर सभी परिजन, आर्यसमाज सांघी, आर्यसमाज तिलक नगर तथा सभी परिचित को बड़ा दुःख हुआ। स्वर्गीया श्रीमती सरोज आर्या बड़ी श्रद्धालु तथा धर्मपरायण उत्तम आर्य संस्कारों से ओतप्रोत थी। दिनांक 22 अगस्त 2013 को सभी श्रद्धा से शान्तियज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें सभी निकट व दूर के सम्बन्धी, सज्जन पुरुष तथा आर्यजन शामिल होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये तथा परिवार ने गोशाला खिड़वाली 6600/- रु० तथा आर्यसमाज सांघी को 11000/- रु० का सात्त्विक दान दिया। आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक की तरफ से श्री सुखवीर दहिया तथा आर्यसमाज सांघी की तरफ से श्री भलेराम आर्य पूर्व प्रधान परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं श्री अजीतसिंह नम्बरदार, दोनों बेटों तथा अन्य परिजनों को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

—सुखवीरसिंह दहिया व भलेराम आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (पंजीकृत)

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से नियमानुसार सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

सेवा में,

माननीय श्री प्रधान/मन्त्री जी

सभा से सम्बन्धित **समस्त आर्यसमाज**, हरयाणा

विषय : सभा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव)

मान्य महोदय,

सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिसम्बर 2013 को होना है। इसलिए हरयाणा के सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आगामी 3 वर्ष के लिए अपने आर्यसमाज के प्रतिनिधि आर्यसमाज के नियम-उपनियमों के अनुसार और सभा के संविधान के अनुसार चुनकर, **प्रतिनिधि फार्म भरकर दिनांक 31 अगस्त 2013 तक सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में अवश्य भेज देवें, जिससे आपके प्रतिनिधि समय पर स्वीकार हो सकें।**

प्रतिनिधि निर्वाचन के नियम

1. प्रत्येक आर्यसमाज जो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के साथ कम से कम दो वर्ष से सम्बन्धित हों अर्थात् 31 जुलाई 2013 तक जिसके दो वर्ष पूरे हो चुके और प्राप्तव्य दशांश तथा वेदप्रचार के लिए प्रतिवर्ष कम से कम 1000/- रुपये अथवा अधिक देता हो, को अधिकार होगा कि वह अपने **प्रथम 21 आर्य सभासदों पर एक प्रतिनिधि तथा अगले प्रति 90 आर्य सभासदों** (जिनका नाम उस आर्यसमाज की पंजिका में प्रतिनिधि या प्रतिनिधियों की नियुक्ति तिथि से पूर्व दो वर्ष से अंकित रहे हों और यदि वे शुल्क देने वाले सभासद् हों तो उन्होंने पूरे दो वर्षों का शुल्क आर्यसमाज के उपनियम संख्या-4 के अनुसार दिया हो) **पर एक प्रतिनिधि भेज सकेगा**। प्रतिनिधि फार्म के साथ 2 नवीनतम फोटो पासपोर्ट साइज के साथ भेजें, जिसके पीछे प्रतिनिधि का नाम व विवरण लिखा हुआ होना चाहिये। प्रत्येक प्रतिनिधि का पहचान-पत्र भी जारी किया जाएगा।
2. आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा द्वारा दिनांक 20.5.12 को पारित प्रस्ताव संख्या-14 के अनुसार जिन आर्यसमाजों ने सभा के गत वर्षों के दो निर्वाचनों में या उससे अधिक में अपना नियमानुसार देयशुल्क (वेदप्रचार, दशांश व पत्रिका शुल्क) सभा को प्रदान नहीं किया वे आर्यसमाजें चुनाव प्रक्रिया में भाग न लें सकेंगी। (सोसायटी एक्ट-2012 की धारा-15 के अनुसार)।
3. नए प्रतिनिधियों की स्वीकृति के लिए सभा से सम्बन्धित प्रत्येक आर्यसमाज को पिछले तीन वर्षों का वेदप्रचार तथा दशांश की राशि के साथ-साथ 'आर्य प्रतिनिध' पत्रिका का शुल्क 150 रुपये वार्षिक भेजना अनिवार्य है। वर्ष 2010-2011, 2011-2012, 2012-2013 का शुल्क जमा न होने पर प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं होंगे।
4. आर्य सभासद् वे होते हैं जिनका नाम किसी आर्यसमाज की पुस्तक पर सदाचारपूर्वक दो वर्ष से अंकित रहा हो, शतांश के अनुसार सभासदों की आय के हिसाब से समाज को शुल्क देते रहे हों और जिनकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम 25 प्रतिशत हो। (यदि अन्तरंग सभा में किसी कारण से उनका शुल्क माफ न कर दिया गया हो या उपस्थिति के नियम को शिथिल न कर दिया हो)। अनिश्चय की स्थिति में सभा का निश्चय यह है—

वेदप्रचार	दशांश	आर्य प्रतिनिधि (साप्ताहिक पत्रिका)
1000/-	आय का शतांश या न्यूनतम	150/-

1. सभी सभासदों से उनकी आय का शतांश प्राप्त करें अथवा जो सभासद् नौकरी (प्रथम श्रेणी) अधिक आय वाले, डॉक्टर, वकील, उद्योगपति, इंजीनियर आदि से आर्यसमाज के नियम-उपनियम के अनुसार उनकी आय का शतांश अथवा 1000/- रुपये वार्षिक शुल्क लें।
2. जो सभासद् नौकरी क्लास-II व समकक्ष अन्य आय वर्ग वाले, बड़े दुकानदार आदि से उनकी आय का शतांश अथवा न्यूनतम 20/- रुपये मासिक शुल्क लें।
3. जो सभासद् नौकरी क्लास-III व समकक्ष अन्य आय वर्ग वाले पत्रकार आदि से उनकी आय का शतांश अथवा न्यूनतम 15/- रुपये मासिक शुल्क लें।
4. जो सभासद् पैंशनर, नौकरी क्लास-IV व समकक्ष आय वर्ग वाले, छोटे दुकानदार आदि से उनकी आय का शतांश अथवा न्यूनतम 10/- रुपये मासिक शुल्क लें।
5. जो सभासद् छात्र, बेरोजगार, गृहिणी, मिस्त्री, मजदूर, कृषक, समाजसेवी, आश्रित आदि से न्यूनतम 5/- रुपये मासिक शुल्क लें।
6. **स्थानीय आर्यसमाज द्वारा चुने जाने वाले प्रतिनिधि नए सोसायटी एक्ट-2012 के अनुसार प्रतिनिधि सदस्यता शुल्क वार्षिक के स्थान पर तीन वर्ष का वार्षिक प्रतिनिधि सदस्यता शुल्क सभा को अग्रिम भेजें।**

5. **चुने जाने वाले प्रतिनिधि की आयु 21 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए** और प्रतिनिधि-फार्म पर छपे प्रतिज्ञा-पत्र पर प्रतिनिधि के हस्ताक्षर एवं उसका पूरा पता एवं **फोन नंबर** फार्म में लिखना जरूरी है।
6. प्रतिनिधियों का निर्वाचन अन्तरंग सभा में आर्य सभासद् सर्वसम्मति से या बहुमतानुसार करेंगे परन्तु वह प्रतिनिधि स्वीकार नहीं किया जाएगा जो किसी ऐसे आर्यसमाज का सभासद् हो जिसका सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साथ न हो अथवा जिसने सभा के विरुद्ध कोई वाद उत्पन्न किया हो या अनुशासनहीनता की हो।
7. नया प्रतिनिधि फार्म भेजते समय और प्रतिनिधियों के प्रत्येक चुनाव के अवसर पर जो सभा को प्रार्थना पत्र भेजा जाए उसके साथ आर्यसभासद् होने का निश्चय-पत्र, शुल्क देने और सदाचार व विश्वास रखने का प्रतिज्ञा-पत्र संलग्न होना आवश्यक है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिवेशन में कोई प्रतिनिधि तब तक सम्मिलित न हो सकेगा जब तक उसका निश्चय-पत्र और प्रतिज्ञा-पत्र नियमानुसार सभा के पास न पहुंच चुका हो, जिस समाज का वह प्रतिनिधि हो उससे वेदप्रचार, दशांश तथा 'आर्य प्रतिनिधि' पत्रिका शुल्क की राशि प्राप्त न हो चुकी हो।
8. प्रत्येक आर्यसमाज अपने सदस्यों के शुल्क की आय का दशांश प्रतिवर्ष सभा के कोश में भेजेगा (**सभा के विधान** की धारा 9 नियम एवं नियमावली)।
9. भरे हुए प्रतिनिधि फार्म की एक नकल अपने आर्यसमाज के रिकार्ड के लिए अवश्य रखनी चाहिए। आवश्यकतानुसार खाली प्रतिनिधि फार्म की फोटो कापी करा लें।
10. वही फार्म स्वीकार किये जायेंगे जो आर्यसमाज के नियम-उपनियम तथा सभा के विधान के अनुसार भरकर भेजे जायेंगे।
11. **प्रतिनिधि फार्म सभा कार्यालय से कार्य दिवसों में कभी भी प्राप्त किये जा सकते हैं।**

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध में यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपने आर्यसमाज का पूर्ण सहयोग प्रदान करें। धन्यवाद।

—सत्यवीर शास्त्री, सभामन्त्री

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिसम्बर 2013 को होना है, इसलिए सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपना तीन वर्षीय (2010-2011, 2011-2012, 2012-2013) रिकार्ड जैसे कि सभासदों का सदस्यता रजिस्टर, वार्षिक शुल्क रजिस्टर, साप्ताहिक सत्संग में उपस्थिति रजिस्टर, कार्यवाही रजिस्टर आदि विवरण तैयार रखें।

सभामन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता आचार्य अभयसिंह कुण्डू, श्री सत्यव्रत शास्त्री जून 2013 मास से आर्यसमाजों का रिकार्ड निरीक्षण करने हेतु दौरा कर रहे हैं। जो आर्यसमाजें अपने रिकार्ड का निरीक्षण नहीं करवायेंगी तथा जिनका रिकार्ड ठीक करने की हिदायत देने पर भी ठीक नहीं किया जायेगा उन आर्यसमाजों के प्रतिनिधि फार्म स्वीकार नहीं किये जायेंगे। कृपया अपनी आर्यसमाज का रिकार्ड शीघ्र तैयार करके सभा के उपरोक्त अधिकारियों से निरीक्षण अवश्य करवा लें।

—आचार्य विजयपाल, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

हिन्दुओं की कमजोरियाँ

❑ कृष्णचन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10 पंचकूला, हरियाणा 0172–4010679

हिन्दुओं में कुछ कमियां और कमजोरियां हैं जिनके कारण वे भारत में 80% होते हुए भी प्रभावहीन हैं। प्रस्तुत लेख में उन कमियों पर विचार किया गया है ताकि हिन्दू जाति उन पर चिन्तन करके अपनी कमजोरियों को दूर करके उन्नत हो तथा देष और विश्व में प्रभावशाली भूमिका निभा सके।

1. धर्मगुरुओं के गलत उपदेश–हिन्दुओं के धर्मगुरु उन्हें वीर, बहादुर, पराक्रमी, आत्मस्वाभिमानी, देशभक्त तथा परोपकारी बनने का उपदेश नहीं देते। वे उन्हें अपने बल, बुद्धि का प्रयोग करना भी नहीं सिखाते, वे उन्हें अन्धविश्वासी बनाकर गुरु पर आश्रित रहना सिखाते हैं। वे उन्हें शुभ कर्म करने की शिक्षा देने की बजाए अच्छे–बुरे सब प्रकार के कर्म गुरु को अर्पण करने का उपदेश देते हैं। इस प्रकार हिन्दू मानसिक और बौद्धिक रूप से कमजोर और कायर बनकर गुरु के सहारे बैठ जाते हैं और उसे दक्षिणा के रूप में धन देते रहते हैं।

2. ईश्वर की गलत अवधारणा–ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्व अन्तर्यामी है। वह सारी सृष्टि को बनाने वाला है। वह हमारे सब अच्छे, बुरे कार्यों को देखता और जानता है तथा उनके अनुसार हमें सुख और दुःख के रूप में फल देता है। ईश्वर के इस सत्य स्वरूप को न मानकर मिट्टी के खिलौनों को ईश्वर मान लेना, उनके आगे हाथ जोड़ देना, सिर झुका देना, भोजन परोस देना कोरी अज्ञानता के सिवाए और क्या है।

3. कर्म व्यवस्था को स्वीकार न करना–जैसा अच्छा बुरा कर्म मनुष्य करता है वैसा ही फल उसे ईश्वर की व्यवस्था से मिलता है। ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है, वह कोई सिफारिश नहीं मानता, रिश्वत नहीं लेता। अच्छे और बुरे कर्मों के फल भोगकर ही समाप्त होते हैं। उनसे बचने का कोई भी उपाय नहीं है। फिर भी हिन्दू जाति कोई विपत्ति आने पर उसका कारण ग्रहों–नक्षत्रों को मानती है और इधर उधर ढोंगियों से उपाय करवाती फिरती है। ज्योतिषी के नाम से ढोंगी लोग ऐसे मानसिक रूप से कमजोर लोगों को झूठे आश्वासन देकर उनका धन लूटते हैं।

4. धर्म की गलत अवधारणा–मन, वचन, कर्म से सत्य का आचरण, पक्षपात रहित न्याय, परोपकार, सदाचार आदि ही धर्म हैं। पत्थर की मूर्ति पर दूध डालना और पेट भरे पण्डित को खिलाना, जनेऊ पहनना, तिलक लगाना, चोटी रखना आदि कर्म धर्म नहीं हैं। धर्म का सम्बन्ध शुद्ध आचरण से है, दिखावे और आडम्बर से नहीं।

5. मूर्तिपूजा को ईश्वर की पूजा मानना– मूर्तिपूजा ईश्वर की पूजा नहीं है। ईश्वर की पूजा तो हो ही नहीं सकती। उसे हमारी पूजा की जरूरत भी नहीं। वह कभी प्रसन्न या अप्रसन्न नहीं होता। वह तो सदा आनन्द स्वरूप है। मूर्तिपूजा व्यर्थ है। इसने आज तक हिन्दुओं को दिया ही क्या है। मूर्तिपूजा के कारण हिन्दू जड़बुद्धि, विवेकहीन और शुभ कर्म विहीन हो गए हैं। हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को मुसलमान हमलावरों और शासकों ने तोड़ा और लूटा है। कोई एक मूर्ति किसी आक्रमणकारी की एक टांग भी न तोड़ सकी। अनेक लड़ाइयां हिन्दुओं ने मूर्ति में शक्ति के झूठे विश्वास के कारण मुसलमानों से हारी है जिनके परिणाम स्वरूप हिन्दुओं को भयानक रक्तपात, लूटपाट और दासता झेलनी पड़ी है।

6. गलत और प्रक्षिप्त साहित्य–हिन्दुओं ने अपने असली और सही साहित्य चार वेदों–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद – को तो भुला दिया है। गपौड़ों से भरे अठारह पुराणों को अपना लिया है। पुराणों के अन्दर ज्यादातर बातें झूठी, असम्भव, अनैतिक और अश्लील हैं। हिन्दू बेशक इन पुराणों को पढ़ते तो बहुत कम हैं पर पण्डित लोग इन्हीं पुराणों के आधार पर कथा–वार्ता और उपदेश करते हैं। हिन्दू ऐसे उपदेशों को ही सुनते हैं, उन पर विश्वास करते हैं, ऐसे उपदेशकों को विद्वान मानते हैं और पुराणों को ही असली धर्म ग्रन्थ मानते हैं। जैसा साहित्य वैसी बुद्धि। इसलिए हिन्दुओं की बुद्धि तार्किक नहीं है।

हिन्दू साहित्य की दूसरी बड़ी समस्या है कि रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों में बड़ी भारी मिलावट है जैसे गंगा गंगोत्री से चली तो पूरी तरह स्वच्छ और पवित्र है परन्तु आगे आकर गन्दगी मिलने से दूषित हो गई है। पर हिन्दू इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते, करते भी हैं तो नीर–क्षीर करने की जरूरत नहीं समझते। इसीलिए हिन्दू अविद्या–अन्धकार में फंसे रहते हैं।

7. झूठी आस्था–हिन्दुओं में तार्किक बुद्धि और वैज्ञानिक सोच का अभाव है। आस्था के नाम पर वे बुद्धि को ताक पर रखकर हर गलत बात को सही और असम्भव को सम्भव मान लेते हैं। झूठ मनुष्य को उन्नति की ओर नहीं ले जा सकता, वह तो अवनति की ओर ही ले जाता है। रेत को खाण्ड मानने से वह खाण्ड नहीं बन जाता। आस्था सत्य पर ही आधारित होनी चाहिए, झूठ पर नहीं। इसीलिए हिन्दू भ्रमजाल में फंसे रहते हैं।

8. सभी मजहब एक से हैं की झूठी धारणा–प्रायः करके हिन्दू माने बैठे हैं कि सभी मजहब एक ही सत्य ईश्वर की ओर ले जाते हैं। यह बात उतनी ही गलत है जितनी कि यह कह देना कि चण्डीगढ़ से सभी रास्ते दिल्ली को जाते हैं। सभी सम्प्रदायों में ईश्वर, जीवात्मा, कर्मफल, पुनर्जन्म आदि की अवधारणाएं अलग अलग हैं। मुसलमान तो गैर मुसलमान को यातनाएं देना और जान से मार देना स्वर्ग में जाने का साधन मानते हैं। हिन्दुओं को छोड़ सभी सम्प्रदाय अपने अपने सम्प्रदाय को सबसे बढ़िया बताते हैं और उसे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। वैदिक धर्म की मान्यताएं सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी हिन्दू उन्हें फैलाने का प्रयास नहीं करते क्योंकि हिन्दू उनसे अनभिज्ञ हैं और जानने की इच्छा भी नहीं रखते। सरकार द्वारा प्रसारित 'सर्वधर्म समभाव' की झूठी धारणा को हिन्दू गले लगाए हुए हैं और झूम झूम कर झूठा गीत गाया जाता है – मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना। इसलिए हिन्दू सदा घटाओ की स्थिति में रहे हैं, इन्होंने बढ़ाओ की ओर कभी ध्यान नहीं दिया।

9. मूर्ति में प्राण–प्रतिष्ठा–वेद ने ईश्वर को शरीर रहित (अकायम्), अजर, अमर, अजन्मा, नित्य और पवित्र बताया है। परन्तु हिन्दुओं ने अपनी कल्पना से अलग अलग तरह के भगवान बना लिए हैं। ईश्वर का विषय मन और आत्मा से सम्बन्धित है परन्तु मूर्तिपूजकों ने इसे आँख का विषय बना लिया है। पण्डितों द्वारा मूर्ति में प्राण–प्रतिष्ठा का ढोंग भी हिन्दुओं को समझ में नहीं आता। साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी जानता है कि पत्थर की मूर्ति में न तो देखने–सुनने की शक्ति है, न उसमें कुछ समझने या करने की शक्ति है, न ही उसमें प्राण पड़ सकते हैं। पुजारी तो धन ऐंठने के लिए हिन्दुओं को बेवकूफ बनाते हैं। पर हिन्दू क्यों मूर्ख बनते हैं यह बात समझ से परे है।

10. गरीबों के प्रति सहानुभूति की कमी–हिन्दुओं में दान देने की प्रवृति तो है, पर देते गलत जगह पर हैं। वे निठल्ले और पेट भरे पण्डितों को दान देते हैं जो महापाप है। दान तो जरूरतमन्द को देना चाहिए और विद्या के प्रसार के लिए देना चाहिए। गरीबों के प्रति सहानुभूति और सहायता का भाव रखना चाहिए। उनसे नफरत नहीं, उन्हें प्रेम की दृष्टि से देखना चाहिए। बेरोजगारों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने चाहिएं, कल–कारखाने लगाने चाहिएं। ईश्वर के नाम पर मन्दिर में दान देना अपने आपको धोखा देना है क्योंकि ईश्वर देता है, लेता नहीं।

11. हिन्दुओं में अज्ञानता और अन्धविश्वास–अज्ञानता और अन्धविश्वास के कारण हिन्दू झूठे कर्मकाण्डों में फंसे हुए हैं। जो मर चुके हैं उनके लिए वे श्राद्ध करते हैं, ईश्वर–भक्ति के नाम पर जगराता करते हैं। ईश्वर को खुश करने के लिए वे पेड़–पौधों और नदी–तालाबों को पूजते हैं, ईश्वर का मनुष्य रूप में आना–जाना मानते

शेष पृष्ठ 6 पर....

हिन्दुओं की कमजोरियां.... पृष्ठ 5 का शेष.....

हैं। तथा–कथित ज्योतिषियों से वे अपना भूत और भविष्य पूछते फिरते हैं, दुख–तकलीफ को टालने के लिए तागे–ताबीज, जन्त्र–तन्त्र करवाते फिरते हैं।

12. भौंडे गीत–हिन्दू औरतें कीर्तनों में बड़े घटिया किस्म के, बेतुके, बे–सिर–पैर के गीत गाती हैं। उन्हें वीरता के, सदुपदेश देने वाले, सत्य इतिहास बताने वाले सार्थक गीत गाने चाहिएं।

13. जगराते–पाप कर्म–हिन्दुओं में जगरातों की कुप्रथा पिछले 40 या 50 वर्षों से आरम्भ हुई है। ईश्वर भक्ति के नाम पर लाऊडस्पीकर की ऊँची आवाज में रात भर घटिया किस्म के गीत गाते हैं, फिर घटिया, असम्भव, विनाशकारी कहानी कहते हैं। साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी इन जगरातों की निस्सारता को समझ सकता है, तो फिर हिन्दू क्यों नहीं समझते।

14. जातपात–जन्म की जातपात ने हिन्दू समाज को बांट दिया है, बेहद खोखला और कमजोर किया है। जातपात की बात पूरी तरह समाप्त होनी चाहिए। सभी की एक जाति–मनुष्य जाति समझी जाए।

15. इतिहास को भुला दिया–इतिहास से सीख लेकर किसी भी समाज को आगे की रणनीति बनानी चाहिए। अगर आप इतिहास से सबक नहीं सीखते तो आपके साथ फिर वही कुछ होगा जो पहले हो चुका है। मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आठवीं सदी से लेकर अठारहवीं सदी तक अथाह अत्याचार किए हैं। उन्होंने हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा। वहां से सोना, चान्दी, हीरे, जवाहरात के रूप में बेहद धन लूटा। उन्होंने मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदें बना दीं, पुजारियों को गाजर मूली की तरह काटा, करोड़ों की संख्या में हिन्दुओं का कत्लेआम किया, करोड़ों हिन्दुओं को तलवार के जोर से मुसलमान बनाया, लाखों हिन्दू महिलाओं से बलात्कार किया। अब भी पाकिस्तान, बंगलादेश, कश्मीर आदि स्थानों पर जहां मौका लगता है वे वही कुछ कर रहे हैं। 1947 में जब पाकिस्तान बना था तब पाकिस्तान में हिन्दुओं की आबादी 20 प्रतिशत के लगभग थी और अब 1 प्रतिशित रह गई है। बंगलादेश में तब 30 प्रतिशत हिन्दू थे अब 7 प्रतिशत रह गए हैं। कश्मीर में हिन्दुओं पर अत्याचार किए और लगभग तीन लाख हिन्दुओं को कश्मीर छोड़ने पर मजबूर कर दिया। पर हिन्दुओं ने इन सब घटनाओं से कोई सबक नहीं सीखा। हिन्दू अपने मित्र और शत्रु में अन्तर नहीं कर पाते। जो उन्हें समझाता है उसे वे अपना शत्रु मानते हैं और जो उन्हें बहकाता है उसे वे अपना मित्र मानते हैं। यह बहुत ही दुख का विषय है।

16. हिन्दुओं में नेतृत्व और संगठन का अभाव–हिन्दुओं का कोई तगड़ा नेता नहीं है जो सारी हिन्दू जाति को संगठित और सशक्त बना सके।

17. हिन्दू मुसलमानों की कबरों से खैर मांगते फिरते हैं, वे कबरें जिनमें हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले मुसलमानों को कभी दबाया गया था। यह मूर्खता की पराकाष्ठा है, हिन्दू वीरों का अपमान है और अपनी जाति से गद्दारी है। यहां कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं।

अजमेर की दरगाह शरीफ में सूफी सन्त मुइनुद्दीन चिश्ती की कबर है। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (गरीब नवाज) का जन्म 1141 में अफगानिस्तान में हुआ था। वह मुहमद गौरी के साथ भारत आया था। उसने भारत में आकर 700 हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था। अजमेर में जिस स्थान पर दरगाह है वहां पर पृथ्वीराज चौहान का राज्य था। मुहम्मद गौरी पृथ्वीराज चौहान को पकड़कर उसकी आँखे निकालकर उसे बन्दी बनाकर अपने साथ अफगानिस्तान ले गया था।

बहराईच (उत्तर प्रदेश) के पास मसूद गजनी की मजार है। मसूद गजनी, सोमनाथ मन्दिर पर हमला करने वाले महमूद गजनवी का बेटा था। उसने 1033 में बड़ी सेना के साथ भारत पर आक्रमण किया था। जून 1033 में बहराईच के मैदान में मसूद गजनी की और भारत के हिन्दू राजाओं की सेनाओं के बीच जबरदस्त लड़ाई हुई। लड़ाई में मसूद मियां की सेना की हार हुई तथा वह स्वयं भी मारा गया। मुसलमानों ने उसे वहीं दबा दिया तथा उसे गाज़ी की पदवी दे दी। मुसलमानों में गाज़ी की पदवी सबसे बड़ी पदवी मानी जाती है। यह पदवी उसे दी जाती है जिसने गैर–मुसलमानों का कत्लेआम किया हो। वहां पर मुसलमान हर वर्ष इकट्ठे होते हैं और त्यौहार मनाते हैं। दुख और आश्चर्य की बात है कि हिन्दू उन हिन्दू वीरों को तो भूल गए जिन्होंने अपनी जानें देकर मसूद मियां को मारा तथा उसकी सेना को हराया था। उलटा इस मसूद मियां की कबर पर मन्नतें मांगने जाते हैं और टी.वी. चैनल इसे धार्मिक सद्भावना एवं धर्मनिरपेक्षता का जीता जागता प्रमाण बताते हैं।

महाराष्ट्र के एक गांव में अलीशाह की मजार है। बृहस्पतिवार के दिन हिन्दू औरतें उसे पूजती हैं। अलीशाह कौन था? औरंगजेब के समय में अलीशाह नाम का एक मुसलमान था। वह बहुत अत्याचारी था। इलाके में उसका बहुत आंतक था। वह गांव गांव में घूमता रहता था, जो सुन्दर हिन्दू लड़की देखता उसे अपनी वासना का शिकार बनाता था, जिस हिन्दू सेठ साहूकार से जो धन मांगता वह उसे देना पड़ता था। जब किसी हिन्दू युवक का विवाह होता था तब नई दुलहन को पहली रात अलीशाह के साथ बितानी पड़ती थी। जो कोई इस बात को न मानता उसके परिवार को वह समाप्त कर देता था। लगभग बीस गांवों के क्षेत्र में उसका प्रभाव था। हिन्दू उसके सामने मजबूर थे। कई वर्ष तक ऐसा चलता रहा। फिर एक गांव में धनी परिवार के युवक जोरावर सिंह का विवाह हुआ। अलीशाह का सन्देश आ गया कि अपनी पत्नी को उसके पास भेज दो। जोरावर सिंह ने उत्तर भेज दिया कि उसकी पत्नी अपनी एक दासी के साथ उस रात उसके पास पहुँच जाएगी। जोरावर सिंह ने अपने एक मित्र उदय सिंह को साथ लिया। दोनों ने स्त्री का वेश धारण किया, हथियार साथ लिए और गाड़ी में बैठकर अलीशाह के यहां पहुँच गए। नशे में धुत अलीशाह तथा और बहुत से मुसलमान गाडी के पास आ गए। जोरावर सिंह और उदय सिंह ने अलीशाह तथा उसके परिवार के सभी सदस्यों को मार गिराया। मुसलमानों ने अलीशाह को शहीद की उपाधि दी और उसकी मजार बना दी। हिन्दू जोरावर सिंह और उदय सिंह को तो भूल गए, अलीशाह की कबर को पूजने लगे। (स्वामी शिवानन्द–हिन्दुओं की लूट)

आर्यों के तीर्थ

दयानन्दमठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब)

को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्तूबर, 2013

को बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा
जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- **स्वामी सदानन्द सरस्वती**

अध्यक्ष, दयानन्दमठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क :- 01875-220110, 094782-56272, 094172-20110

बीड़ी, शराब, सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे सदैव दूर रहें।

www.thearyasamaj.org

आर्य-संसार

पारिवारिक बृहद् यज्ञ व बालसंस्कार कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 6 अगस्त 2013 को गांव मोखरा जिला रोहतक में बृहद्यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम हुआ। आचार्य वेदमित्र जी ने यज्ञ के लाभ तथा वैज्ञानिक तथ्यों को बताकर परिवार को नित्य यज्ञ करने के लिए आत्मिक संकल्प से दृढ़ किया। सौभाग्य से सात भाइयों का एक घर में एक चूल्हे पर रहने से वैदिक समाज की मिसाल जागृत की है। आचार्य जी ने यज्ञ की श्रद्धा को इसके लिए वरदान बताया। यज्ञ में पास-पड़ोस के अनेक भद्रजन उपस्थित थे। भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई थी एवं कार्यक्रम में भी उपस्थिति अच्छी थी।

इसी प्रकार 13-14 अगस्त को ऋषिकुल विद्यापीठ मदीना जिला रोहतक में आचार्य जी के सान्निध्य में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अभिभावकों को प्रेरित करते हुए आचार्य जी ने कहा कि जीवन को सुखमय बाह्य भवनों व गाड़ियों से नहीं बनाया जा सकता।

स्वयं के अन्दर मन की संतुष्टि ही सुख दे सकती है। जीवन में भौतिक सुखों के साथ-साथ आत्मिक शक्ति को भी बढ़ाना चाहिए। इसी आत्मिक शक्ति के कारण अनेक देशभक्तों ने फांसी को हंसकर स्वीकार किया। देशभक्तों ने **'पहले मैं-पहले मैं'** अपनी जान दूँगा का अग्रणी भाव सामने रखा। आज की **'मैं-मैं'** तो अहंकार भरी है और भाई-भाई से झगड़ा करवा रही है। **'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'** की इन पवित्र ऋचाओं से अपने को भी पवित्र किया जा सकता है।

कार्यक्रम का संयोजन विद्यालय के संचालक श्री आनन्द जी ने किया। सभी बालकों ने अपने-अपने विषय में प्रभावित किया।

वैवाहिक विज्ञापन

क्या आपको योग्य वर-वधू की तलाश है ?

तो फिर भला देर किस बात की ? आज ही वैवाहिक कालम में अपना विज्ञापन भेजिए। एक बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु० 250/- तथा तीन बार में 700/- अपेक्षित है। धन्यवाद।

सम्पादक—आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' दयानन्दमठ, रोहतक

दूरभाष : 01262-216222

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

—वानप्रस्थी अत्तरसिंह स्नेही, सभा पुस्तकाध्यक्ष

5 सितम्बर शिक्षक दिवस पर विशेष...

शिक्षक एक ऐसा दीपक है जो पूरे राष्ट्र में ज्ञान का प्रकाश फैलाता है

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

हर सफल व्यक्ति के पीछे कोई न कोई शिक्षक अवश्य होता है। जैसे माली एक-एक पौधे को संवारता है, कारीगर एक-एक पत्थर को तराश कर सुन्दर मूर्ति बनाता है, वैसे ही शिक्षक एक-एक बालक के गुणों को विकसित करता है। कोई चिकित्सक बन जाता है तो कोई इंजीनियर। कोई प्रशासनिक अधिकारी बन जाता है तो कोई व्यापारी। अपने-अपने गुणों के आधार पर सभी कर्मक्षेत्र में पदार्पण करते जाते हैं। लेकिन सभी की सुप्त शक्तियों को जागृत करने वाला शिक्षक ही है। इसीलिए भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० एस. राधाकृष्णन् ने अपने जन्मदिवस 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने का आह्वान किया था, क्योंकि वह स्वयं अनेक वर्षों तक अध्यापक रहे थे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश में शिक्षाप्रणाली में सुधार लाने के लिए अनेक बार शिक्षा आयोग गठित किये गये। इन आयोगों की रिपोर्ट को क्रियान्वयन भी किया गया जिसके कारण शिक्षा क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति हुई है। आज हमारा देश इंजीनियरिंग, मेडिकल एवं कृषि शिक्षा में अन्य देशों की तुलना में आगे है। योग्य एवं कर्त्तव्यपरायण शिक्षकों ने ही शिक्षा का विस्तार किया है। इसलिए शिक्षक ही राष्ट्र की उन्नति का आधार है। राष्ट्र के भविष्य को उज्ज्वल रखने वाले शिक्षक ही हैं।

5 सितम्बर शिक्षक दिवस के अवसर पर भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों द्वारा योग्य अध्यापकों को सम्मानित किया जाता है। ये वे समर्पित एवं कर्त्तव्य परायण अध्यापक होते हैं जिनके परीक्षा परिणाम अच्छे होते हैं तथा जो अपने-अपने सामाजिक क्षेत्र में विशेष पहचान रखते हैं। सम्मानित होने वाले शिक्षक अन्य शिक्षकों के लिए प्रेरणा के केन्द्र बन जाते हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का दायित्व केवल अपने विषय का विद्यार्थियों को ज्ञान देना है, उसकी योग्यता का मूल्यांकन वार्षिक परीक्षा से होता है। यदि उसके विषय में विद्यार्थी शत-प्रतिशत पास होते हैं तो उसकी वेतनवृद्धि भी होती है अथवा नहीं। इसीलिए वार्षिक परीक्षा के अवसर पर सभी अध्यापकों का एकमात्र लक्ष्य होता है कि उसके विषय का परीक्षा परिणाम बेहतर हो।

क्या इतना ही शिक्षक का दायित्व है ? नहीं। शिक्षक का दायित्व है विद्यार्थी को मानवता का मार्ग दिखाना, चरित्रवान् बनाना, कर्मशील बनाना, अच्छे संस्कार देना, तन-मन-आत्मा को निर्मल-बलिष्ठ बनाना, विज्ञान-ज्ञान का मर्म बताना और राष्ट्र का योग्य नागरिक बनाना। यही वास्तविक शिक्षा है।

पिछले 66 वर्षों में चार शिक्षा आयोगों की नियुक्तियाँ हुईं। 1948-49 में विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा की उन्नति के लिए राधाकृष्णन् आयोग, 1952 में माध्यमिक शिक्षा स्तर की उन्नति के लिए मुदालियर आयोग, 1968 ई० में कोठारी आयोग, चौथा सम्पूर्ण शिक्षा आयोग, इन सब आयोगों की सिफारिशों को भारत सरकार ने लागू किया, उसी के परिणाम स्वरूप आज हमारे देश की शिक्षापद्धति उन्नति के पथ पर अग्रसर है। सरकारी स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों, प्राध्यापकों के वेतनमान बहुत अच्छे हैं लेकिन अभी बहुत कार्य बाकी है।

शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक केवल अध्यापन कार्य ही करे-उसे गैर शैक्षणिक कार्यों से दूर रखा जाए ताकि उसकी पूरी क्षमता नई पीढ़ी के निर्माण में लगे।

प्रो० शरद नारायण खरे ने शिक्षकों के प्रति कितनी भावपूर्ण पंक्तियाँ लिखी हैं—

भारत माँ के आँचल में हो खुशियों की बरसात।
बन करके सच्चे सपूत, तुम दो माँ को सौगात॥
जाओ जहाँ अभिनन्दन हो, थिरक उठे विश्वास।
अपनी ऊर्जा, शक्ति से तुम रच डालो इतिहास॥

www.thearyasamaj.org

स्वास्थ्य चर्चा मधुमेह (Diabetes)

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मो० : 9416133594

गतांक से आगे....

जब मधुमेही अपने जीवन के साथ लापरवाही करने लग जाता है तब मधुमेही के सामने कई शारीरिक उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं, इसलिए मधुमेही रोगी को अपने जीवन के साथ ताल-मेल मिलाकर जीवन यापन करना चाहिये, क्योंकि मधुमेही रोगी की लापरवाही से अनेक उपद्रव होने का भय रहता है। इसलिए जीवन को लम्बा बनाने के लिए सतर्क व सावधानी अथवा उपद्रवों से बचने के लिए जो नियम व सावधानियाँ निर्धारित की हैं उनका दृढ़ता से पालन करना चाहिए। मधुमेह में कुछ ऐसे उपद्रव होते हैं जो रोगी स्वयं अपनी लापरवाही से बढ़ा लेता है उनके कुछ लक्षण हम नीचे लिख रहे हैं।

बहुत प्रकार के उपद्रवों में से एक है—हाइपोग्लाइसीमिया। कोई भी मधुमेही इस आपातस्थिति से गुजर सकता है। समय पर भोजन न करने व क्षमता से अधिक श्रम करने से रक्त में शर्करा की मात्रा एकदम कम हो सकती है। इसके लक्षण उभरने पर एकाएक बेचैनी होने लगती है, मन घबराने लगता है, शरीर में पसीना आने लगता है। दृष्टि एकाग्र करने में दिक्कत होती है, पांव लड़खड़ाने लगते हैं, जिस्म कांपने लगता है, चक्कर आने लगते हैं, दिल धक-धक कर दौड़ने लगता है और जोर-जोर से भूख लग सकती है। रोगी को अपनी सुध-बुध नहीं रहती यदि तुरन्त कुछ न किया जाये तो रोगी बेहोशी की हालत में चला जाता है। उसे दौरे भी पड़ सकते हैं। हाइपोग्लाइसीमिया प्राय: तेजी से उभरते हैं। यदि किसी दिन अचानक हाइपोग्लाइसीमिया के लक्षण उभर आयें तो डाक्टरी परामर्श तुरन्त लेनी चाहिए। संकट के समय ग्लूकोस देने से संकट टल जाता है। पर लंबे समय तक असर करने वाले इंसुलिन का पूरा प्रभाव देर से होता है। इसलिए हाइपोग्लाइसीमिया के लक्षण देर से दोपहर, रात या अगली सुबह दिखते हैं।

हाइपोग्लाइसीमिया से बचने के लिए यह आवश्यक है कि मधुमेही सही समय पर भोजन करे। ज्यादातर मामलों में काम में उलझ कर इस बारे में असावधान होने से ही हाइपोग्लाइसीमिया होता है। इंसुलिन या गोलियां अपना काम करने से चूकती नहीं है तथा खाना न खाने से रक्त में और ग्लूकोस आ नहीं पाता।

उसी प्रकार किसी दिन अचानक ज्यादा शारीरिक मेहनत हो जाये जिसका जिस्म आदी न हो, तो बहुत-सा ग्लूकोस उसमें खप जाता है। इसमें भी हाइपोग्लाइसीमिया के लक्षण उभर सकते हैं। इसलिए जब अतिरिक्त मेहनत करनी हो तो हल्का नाश्ता कर लेना बेहतर रहता है।

इंसुलिन ले रहे मधुमेही को हाइपोग्लाइसीमिया के इस खतरे के प्रति सदैव सजग रहना चाहिए। यह संकट उसके जीवन में कभी भी आ सकता है। अत: उसे अपने पास शुगर क्यूब्स, मीठी गोलियां या ग्लूकोस हमेशा रखना चाहिए। यह तैयारी उसके लिए बहुत आवश्यक है। यदि बेचैनी हो, पसीना छूटे या कोई अन्य लक्षण दिखे तो बिना समय गंवाए उसको किसी भी रूप में चीनी या ग्लूकोस ले लेना चाहिए। कभी यह भी हो सकता है कि मसला कोई दूसरा ही हो। पर उस किस्म की गलती हो जाने से कोई नुकसान नहीं होता। जबकि हाइपोग्लाइसीमिया का रिएक्शन खतरे से खाली नहीं है।

रोगी के परिवारजनों दफ्तर के साथी, स्कूल, कॉलेज के मित्रों को भी इस संभावना के प्रति सावधान रहना चाहिए।

दूसरी आपात अवस्था डाइबिटीज कीटो-एसिडोसि की है। यह जटिलता उन्हीं मरीजों में देखी जाती है जो अपने इलाज के बारे में लापरवाह होते हैं या उन्हें इसकी समझ नहीं होती कि नियंत्रण में न रहने से रोग क्या कहर ढा सकता है?

डाइबिटीज किटो-एसिडोसिस एक खतरनाक अवस्था है। इंसुलिन की खोज से पहले 50 प्रतिशत मधुमेही अंतत: इसके द्वारा ही दुनिया से कूच करते थे। परन्तु वर्तमान समय में इस संकट से पूरी तरह उबरा जा सकता है। रोग का सही और नियमित उपचार होता रहे, तो डाइबिटीज किटो-एसिडोसिस की अवस्था नहीं आती। पर इसके बावजूद मधुमेह से होने वाली दो प्रतिशत मौतें आज भी इसी कारण से होती हैं।

इसमें शरीर की रस प्रक्रिया और जैव रासायनिकी पूर्णत: बिगड़ जाती है। खून में ग्लूकोस की मात्रा बढ़ती जाती है, लेकिन जिस्म और ज्यादा ग्लूकोस बनाने की कोशिश में जुटा रहता है। प्रोटीन और ग्लाइकोजन के भण्डार टूटते हैं। इससे ग्लूकोस, नाइट्रोजन, पानी और इलैक्ट्रोलाइट कोशिकाओं से बाहर आ जाते हैं। मूत्र के रास्ते बड़ी मात्रा में पोटेशियम, मैग्निशियम और फासफोरस व्यर्थ बहने लगते हैं। संग्रहित चर्बी भी टूटती जाती है और जिस्म में एसिटोन इकट्ठा हो जाता है। खून में एसिटोन बढ़ने से उसमें अम्ल की मात्रा बढ़ जाती है। कार्बन-डाई-आक्साइड भी बढ़ जाती है जिसे साफ करने के लिए रोगी के फेफड़े तेज-तेज सांस भरने लगते हैं। शरीर में पानी की भारी कमी हो जाती है।

डाइबिटीज किटो-एसिडोसिस रोगी के उपचार के प्रति लापरवाह रहने से ही उपजती है। जिस्म पर किसी तरह का दबाव, विशेष रूप से किसी तीव्र संक्रमण का प्रकोप, किसी भी मधुमेही को इस संकट में डाल सकता है।

बहुत अधिक तीव्र प्यास लगते रहना, बार-बार पेशाब के लिए जाना, इसके प्रमुख लक्षण हैं।

सम्पर्क-योगस्थली आश्रम,
बुचौली रोड, महेन्द्रगढ़

उत्तराखण्ड बाढ़पीड़ितों के लिए सहायता की अपील

उत्तराखण्ड में बारीश, बाढ़ और भूस्खलन से आई भीषण आपदा ने विनाश जैसे हालात पैदा कर दिये हैं। तबाही के मंजर रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं। सैकड़ों लोग मारे गये हैं, सैकड़ों लापता हैं और हजारों-हजार को मदद की आवश्यकता है। यह समय राष्ट्रधर्म निभाने, पीड़ितों के साथ खड़े होने और उन्हें यह भरोसा दिलाने का है कि हम सब उनके साथ हैं। हम सब मिलकर उत्तराखण्ड के विपदाग्रस्त और असहाय लोगों के जीवन को संबल प्रदान कर सकें, इसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक ने **'उत्तराखण्ड बाढ़पीडितों की सहायतार्थ कोष'** बनाया है तथा पर्याप्तों का सहयोग मिल रहा है।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कार्यालय में नकद या बैंक ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक' के नाम से राशि भेज सकते हैं। दानदाताओं के नाम आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साप्ताहिक समाचार-पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' में प्रकाशित किये जायेंगे।

आचार्य बलदेव संरक्षक **आचार्य विजयपाल** प्रधान **सत्यवीर शास्त्री** मंत्री **सूबे. करतारसिंह** कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल का निर्वाचन

प्रधान-श्री हरिसिंह सन्धु, मन्त्री-श्री संदीप लाठर, कोषाध्यक्ष-श्री सुन्दरसिंह आर्य।

सूचना
7वाँ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

भारत के बाहर विदेशों में होने जा रहे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की श्रृंखला में 7वाँ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दक्षिण अफ्रीका में दिनांक 28, 29 एवं 30 नवम्बर 2013 को सम्पन्न होने जा रहा है। सम्मेलन में भाग लेने वाले इच्छुक व्यक्ति सूचित करें।

प्रकाश आर्य, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
दिल्ली, मो० 9826655117

इच्छुक व्यक्ति अपने नाम भेजने हेतु व विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें—

श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल (उपप्रधान) मो० 09824072509
श्री विनय आर्य (उपमन्त्री) मो० 09958174441

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।